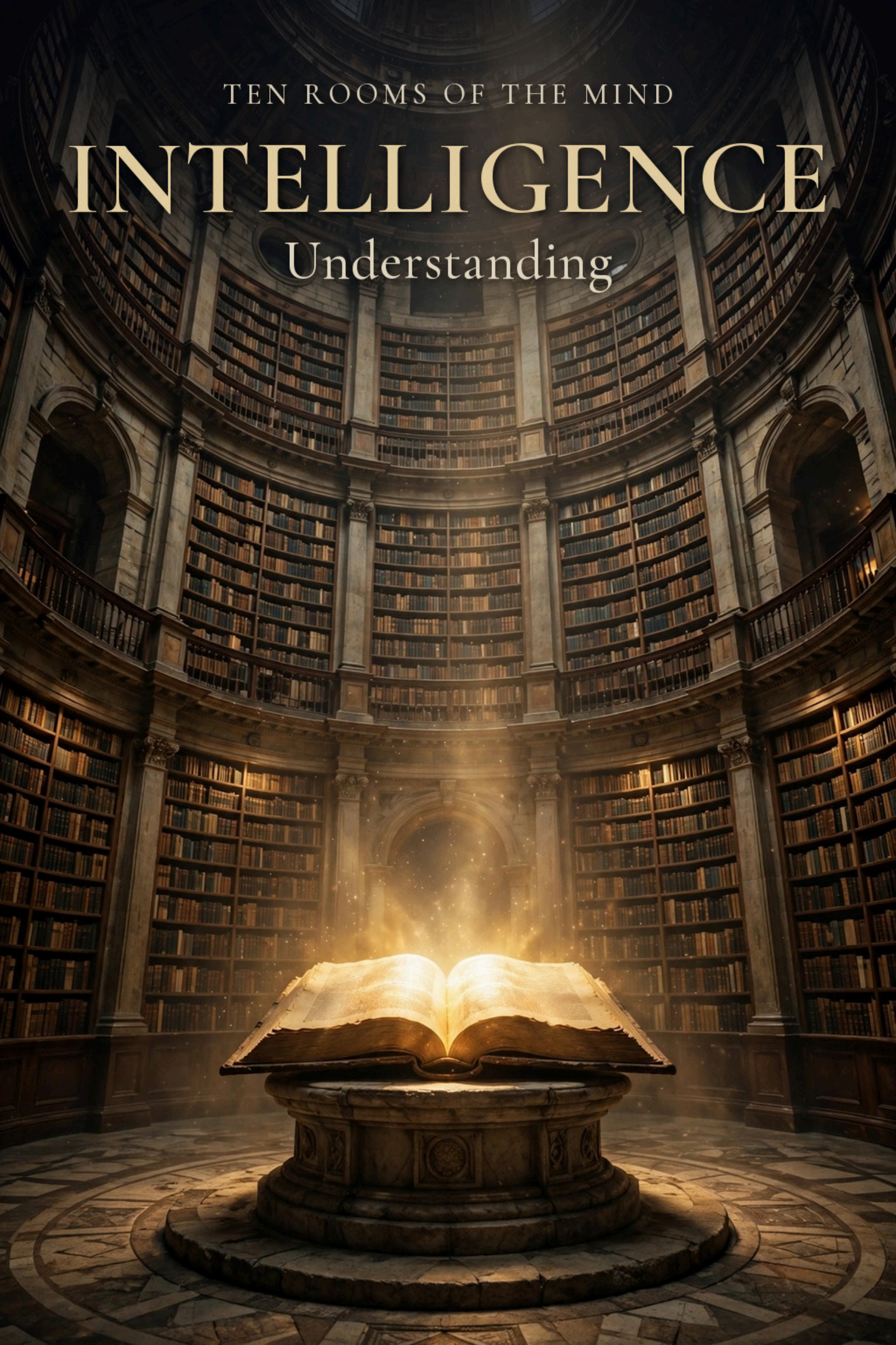
TEN ROOMS OF THE MIND

INTELLIGENCE

Understanding



जिलेट बुद्धिमत्ता

समझ

मन के दस कमरे

एक घर है जिसमें हममें से हर कोई रहता है, उसे कभी चुने बिना।

उसका कोई पता नहीं। वह किसी नक़्शे पर नहीं मिलता। फिर भी हम उसे उन सब जगहों से बेहतर जानते हैं जहाँ हम सचमुच कभी रहे हैं। भीतर दस दरवाज़े हैं।

कुछ को हम हर दिन खोलते हैं, और हमें पता भी नहीं चलता।

कुछ पर हम ताला लगाए रखते हैं, यह जताते हुए कि उनका हमसे कोई वास्ता नहीं।

और फिर वे कमरे हैं जिन्हें हमने ख़ुद नहीं बनाया, फिर भी न जाने कैसे उन्हें अपने भीतर लिए फिरते हैं। यह कोई सिद्धांत नहीं है।

यह मनोविज्ञान की कोई पोथी नहीं जो किसी ताक़ पर पड़ी धूल खा रही हो।

यह उस आदमी की आपबीती है जो इन दस कमरों से एक-एक करके गुज़रा, अक्सर यह जाने बिना कि वह कहाँ है, और जो अब, कंधों पर कुछ और बरस लिए, उन्हें ठीक वैसा ही बयान करने की कोशिश कर रहा है जैसा उसने उन्हें जिया।

दस दरवाज़े।

मैंने सब खोले।

कुछ जिज्ञासा से।

कुछ बेमन से।

कुछ तभी, जब लौटने के लिए बहुत देर हो चुकी थी।

अगर ये कमरे आपको जाने-पहचाने लगें, तो इसलिए नहीं कि वे मेरी कहानी कहते हैं।

इसलिए कि कहीं बहुत गहरे में वे आपकी कहानी भी कहते हैं।

फर्दिनांदो

बुद्धिमत्ता — समझ

जवानी में मैं मानता था कि बुद्धिमत्ता जवाबों का मामला है।

वक़्त के साथ मैंने जाना कि वह सवालों की चीज़ है।

मैं ऐसे पढ़े-लिखे लोगों से मिला जो सब कुछ जानते थे।

और ऐसे सीधे-सादे लोगों से जो सब कुछ समझते थे।

फ़र्क़ बहुत बड़ा था।

पहले वाले जमा करते थे।

दूसरे वाले बात की तह तक पहुँचते थे।

सच्ची बुद्धिमत्ता घुसपैठ नहीं करती।

वह देखती है।

फ़ैसला सुनाने की हड़बड़ी नहीं करती।

इंतज़ार करती है।

वह बंद दरवाज़े से ज़्यादा खुली खिड़की जैसी होती है।

आप उसे छोटी-छोटी बातों में पहचान लेते हैं।

उसे कभी जल्दी नहीं होती।

क्योंकि वह जानती है कि हक़ीक़त लगभग हमेशा हमारी रायों से ज़्यादा पेचीदा होती है।

और जो सचमुच बुद्धिमान हैं, वे ख़ुद को कभी ऊँचा नहीं समझते।

उनमें जिज्ञासा होती है।

वे जानते हैं कि हर यक़ीन अस्थायी है।

हर सच में एक छाया होती है।

और समझना बोलने से कहीं ज़्यादा मुश्किल है।

फिर किसी ने खोज निकाला कि बुद्धिमत्ता को धंधा बनाया जा सकता है।

उसे नापा गया।

श्रेणियों में बाँटा गया।

पैक किया गया।

बेचा गया।

टेस्ट, अंक और रैंकिंग सामने आए।

मानो किसी दिमाग़ को एक स्कोर में समेटा जा सकता हो।

मानो बुद्धिमत्ता किसी प्रश्नावली के भीतर रहती हो।

आज बहुत-से लोग पैसे देते हैं ताकि उन्हें बताया जाए कि वे बुद्धिमान हैं।

यह एक फलता-फूलता बाज़ार है।

मगर उस पुष्टि की ज़रूरत ही अपने आप में सोचने पर मजबूर कर देनी चाहिए—यही वह पहला असली सवाल है जो वह टेस्ट कभी नहीं पूछेगा।

फर्दिनांदो